16वीं लोक सभा के माननीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने के उपरांत दिया गया भाषण

1- महान भारत की सोलहवीं लोक सभा के अध्यक्ष पद पर आपके द्वारा मुझे सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित किये जाने के लिए मैं आपकी अत्यन्त आभारी हूँ ।

2. मेरे लिए ये क्षण जितने गौरवपूर्ण है उतने ही चुनौतीपूर्ण है । जो दायित्व आपने मुझे सौंपा है उसके गुरुतर भार को वहन करने की चुनौती भी मेरे समक्ष है। मै जानती हूँ कि मेरे लिए जो भावपूर्ण उद्गार इस सदन में विभिन्न वक्ताओं द्वारा व्यक्त किये गये हैं वे प्रकारान्तर से मुझसे की जाने वाली अपेक्षाओं के रूप में भी थे ।

3. इस सदन में पिछले निरंतर पच्चीस वर्ष के मेरे अनुभव के बल पर मैं इन अपेक्षाओं पर खरा उतरने का भरसक प्रयत्न करूंगी और आपको निराश नहीं होने दूंगी ऐसा आश्वासन मैं आपको देती हूँ।

4. मैं स्वयं भी पूर्णरूप से आश्वस्त हूं कि आप सभी का सक्रिय सहयोग मुझे सदन को नियमित तथा निर्बाध रूप से चलाने में मिलता रहेगा।

माननीय सदस्यगण,

5. मैं आप सभी को सोलहवीं लोक सभा के लिए निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई देती हूँ। हमारे देश के मतदाताओं ने हमें एक सुअवसर दिया है तथा सवा सौ करोड़ से भी अधिक लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का दायित्व हमें सौंपा है। इस दायित्व का निर्वाह पूर्ण कर्त्तव्यनिष्ठा और समर्पण भाव से करने पर ही हम उस विश्वास को बनाये रख सकते हैं जो भारत की जनता ने हम सब में व्यक्त किया है।

6. अब हमारे और विशेष रूप से राजनीतिक दलों के नेताओं के समक्ष यह चुनौती है कि हम देश में शांति, प्रगति और खुशहाली के एक नए युग का सूत्रपात करें। इस चुनाव में सुशासन और विकास का सुस्पष्ट जनादेश मिला है। जिसका सम्मान कर देश को प्रगति व विकास के पथ पर अग्रसर करना हम सभी का कर्त्तव्य है।

7. हाल ही में सम्पन्न आम चुनाव हमारे देश के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है, जिसमें प्रतिनिधियों को चुनने के लिए सर्वाधिक 66.48 प्रतिशत अर्थात् लगभग 82 करोड़ से भी अधिक मतदाताओं ने मतदान किया जो कि एक रिकार्ड है।

8. आप सभी को विदित है कि विधायी कार्य हमारा अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। जनता के हितार्थ पारित किये जाने वाले अधिनियमों पर अर्थपूर्ण चर्चा सदन का महत्वपूर्ण कार्य है, विस्तृत तथा सर्वांगीण चर्चा के माध्यम से ही हम त्रुटिरहित जनहित साधने वाले कानून बना सकते हैं । मेरा सभी सम्माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे सदन में सार्थक चर्चा के माध्यम से विधायी कार्य में अपना योगदान दें।

9. सदन की विभिन्न समितियाँ भी संसदीय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । सदन में आने वाले विषयों पर समितियों में विस्तृत चर्चा हो जाने से सदन का महत्वपूर्ण समय बचता है । मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करती हूँ कि वे सदन की जिस समिति के सदस्य बनेंगे उसके कार्य में अत्यधिक रुचि लेकर विधायी कार्य को गतिमान बनाने में सहायता करें ।

10. हमारी संसद प्रबुद्ध और सुसंस्कृत चर्चा का मंच हुआ करती थी जिसमें सुविज्ञ और दिग्गज सांसद भाग लेते थे। जहां हम उस शानदार परंपरा का निर्वहन करते हैं वहीं, कई बार हम रास्ता भटक भी जाते हैं। स्वस्थ चर्चा की शानदार परंपरा ही हमारा आधार होनी चाहिए ताकि इस महान लोकतात्रिक संस्था की विश्वसनीयता को और अधिक मजबूत बनाया जा सके।

11. आज जब मैं पीठासीन अधिकारी के रूप में इस सदन के संचालन के इस नए दायित्व को सँभालने जा रही हूँ, मैं सभी राजनीतिक दलों के नेताओं और सदस्यों से अपेक्षा करती हूँ कि वे सदन के सुचारू संचालन में मुझे सहयोग देंगे और मेरा सदस्यों से निवेदन है कि वे विभिन्न संसदीय साधनों का उपयोग समुचित और प्रभावी ढंग से करें ताकि यह सदन लोकतंत्र की सही मिसाल बन सके।

माननीय सदस्यगण,

12. संसद हमारी सांस्कृतिक विविधता एवं उसमें छिपी हमारी एकता परिलक्षित करती है। संसद इसी अर्थ में नियम बनाने की भूमिका से ऊपर हमारी राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतिबिंब है । यहां हम अपनी भूमिका का आकलन सिर्फ अपने संसदीय क्षेत्र के संन्दर्भ में नहीं कर सकते हैं । हमें व्यापक राष्ट्र निर्माण को लेकर चलना होगा । राष्ट्र सर्वोपरि है, यह भाव आवश्यक है।

13. संसदीय जनतंत्र में अलग-अलग राजनैतिक विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य सदन में होना स्वाभाविक है परन्तु फिर भी सभी सम्माननीय सदस्यों का सदन की कार्रवाई में समान रूप से सहभागी होना अपेक्षित होता है। क्योंकि हमारी मान्यता है कि -

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सहचित्तमेशाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः, समानेनेन वो हविशा जुहोमि।।

Common be the prayer of these (assembled worshippers), common be the acquirement, common be the purpose, associated be the desire. I repeat for you a common prayer, I offer for you a common oblation.

मुझे विश्वास है कि माननीय सदस्य अपने इस दायित्व को ध्यान में रखकर सदन के कार्य में सहभागी बनेंगे।

माननीय सदस्यगण,

14. यह हर्ष का विषय है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्रीजी ने निर्वाचन के परिणामों की घोषणा के पूर्व ही संकेत किया था कि वे सवा सौ करोड़ भारतीयों के प्रधान मंत्री होगे तथा उनके लिए हर सांसद समान रूप से महत्वपूर्ण होगा ।

15. मेरे जीवन में प्रातः स्मरणीय लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर मेरी प्रेरणा स्रोत एवं आदर्श रही हैं । अपनी राजनीतिक यात्रा में मुझे लोकतंत्र की कई महान हस्तियों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संसद के साथ मेरा संबंध नौवीं लोक सभा से प्रारंभ होकर अब तक जारी है। मुझे अनेक पदों पर रहते हुए, विभिन्न संसदीय समितियों के सभापति और सदस्य के रूप में; लोक सभा की सभापति तालिका की सदस्य के रुप में; विभिन्न मंत्रालयों में केंद्रीय मंत्री के रूप में अपने देश और देशवासियों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

16. मेरा सार्वजनिक जीवन विविध घटनाओं भरा और सक्रिय रहा है। मुझे राष्ट्रहित में योगदान और इसके माध्यम से अपने जीवन को नया आयाम देने का यह सुअवसर मिला है जिससे मुझे असीम संतोष का अनुभव हो रहा है।

17. श्री जी.वी. मावलंकर से लेकर आज तक मेरे सभी पूर्ववर्ती अध्यक्षों का प्रयास रहा है कि संसदीय लोकतंत्र की परम्पराओं को कायम रखा जाए और सभा के सुचारू संचालन के लिए परिपाटियां और नियम बनाये जाएँ। उनसे मिली महान विरासत के लिए मैं उन्हें आदरपूर्वक स्मरण करती हूं। आवश्यकता पड़ने पर, नयी स्वस्थ परम्पराएँ भी हम सब मिलकर प्रारंभ करें, यह मेरा प्रयास रहेगा।

18. मैं पुनः इस सभा के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने सभा की अध्यक्षता के लिए मुझमें अपना विश्वास व्यक्त किया। मैं विशेष रूप से माननीय प्रधानमंत्री जी तथा सभी दलों और समूहों के नेताओं और सभी माननीय सदस्यों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देती हूँ। इस अवसर पर मैं सामयिक अध्यक्ष श्री

कमलनाथ जी को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने अध्यक्ष पद पर मेरे निर्वाचन से पहले सभा के गरिमापूर्ण और निर्विघ्न संचालन की परम्परा कायम रखी।

19. मुझे विश्वास है कि दक्ष लोक सभा सचिवालय की सहायता और पूर्ण सहयोग से मैं सभा की अपेक्षाओं को पूरा कर पाऊंगी और अंत में, मैं सभी माननीय सदस्यों का आह्वान करती हूँ कि वे लोकतंत्र के इस मंदिर के माध्यम से देश और देशवासियों की सेवा के प्रति स्वयं को समर्पित करें। सभी की तरफ से मैं उस जगन्नीयता को प्रणाम करती हूं।

अजययम् आत्मसामर्थ्यम्, सुशीलम् लोकपूजितम्।
ज्ञानम् च देहि विश्वेश, ध्येयमार्गप्रकाशकम्।।

Grant us, o Lord of the universe, the invincible inner strength and virtuous character that all humanity adores, and the knowledge that will enlighten the path leading to our mission.

धन्यवाद।